अध्याय पाँचवाँ

गोदान में धर्म की स्थिति

'गोदान' में धर्म की स्थिति --

धार्मिक परिस्थिति का उल्लेख 'गोदान' में विशेष रुप से हुआ है। दातादीन के माध्यम से उस सारे पाखण्ड का प्रदर्शन कराया गया है जो धर्म के नामपर इस युग में हो रहा था। केवल कर्मकाण्ड को धर्म मानकर अशिक्षित जनता का शोषण हो रहा था। 'गोदान' का कथानक यह स्पष्ट कर देता है कि किसान आर्थिक शोषण के साथ इस धार्मिक शोषण से पीड़ित है। स्नान, पूजा-पाठ, तिलक-धारण, कथा-पाठ, अस्पृश्यता, पवित्र भोजन यही धर्म के लक्षण माने जाते हैं। अज्ञानी कृषक इन्हीं लक्षणों को देखकर किसी को धर्मात्मा समझ बैठता है। बिरादरी को मात देने से, ब्राह्मणों को भोज देने से पाप छूट जाता है, उध्दार हो जाता है - इन धार्मिक विचारों से दीन-हीन प्रजा संत्रस्त की जा रही है। निर्धनों का शोषण करनेवाले सत्यनारायण की कथा सुनकर पुण्यात्मा कहलाने लगते है। इस सारी स्थिति का सम्बन्ध विशेषतया ग्रामीण प्रजा के साथ उल्लिखित हुआ है --

'भारतीय किसान प्रकृति से धर्मभीरु रहा है। ईश्वर की न्यायप्रियता और दयालुता में उसका पक्का विश्वास होता है। प्रेमचंद ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते। फिर भी उन्होंने किसानों की इस धर्मभीरु प्रकृति को उनका रुढिवाद कहकर उनकी हँसी नहीं उडायी है। हालांकि अपनी धर्मभीरुता के हाथों ही वह लुटता है लेकिन इसी कारण अन्याय से उसे स्वाभाविक घृणा भी होती है। अन्यायी को दण्ड देने का कार्य ईश्वर का है और भाग्य पर भरोसा करके संतोष धारण कर लेता है। प्रेमचंदजी ने किसानों की इस प्रकृति की आलोचना भी की है, फिर भी उनकी रचना का मुख्य बिन्दु उन लोगों की आलोचना करना रहा है जो किसान की इस प्रकृति की आड में शोषण करते हैं।'[१]

---

१ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२००-२०१
वाणी प्रकाशन, ६१-एफ, कमलानगर, दिल्ली-७
प्रथम संस्करण - १९८२

प्रेमचंदजी ने धर्म के शोषक रुप का चित्रण किया है। हिन्दू धर्म में ब्राह्मण का ब्राह्मणवाद अन्य जातियों का शोषण करता है। प्रेमचंदजी ने ब्राह्मण को सिर्फ किसान के शोषक के रुपमें ही नहीं देखा है, बल्कि उनकी गणना उन्होंने राष्ट्रीय शोषकों में की है। 'गोदान' में दातादीन पुरोहितगिरी की आर्थिक व्याख्या करता हुआ कहता है —

"तुम जजमानी को भीख समझो, मैं तो उसे जमींदारी समझता हूँ, बंधघर। जमींदारी मिट जाय, बंकघर टूट जाय, लेकिन जजमानी अन्ततक बनी रहेगी। जब तक हिन्दू जाति रहेगी, तब तक ब्राह्मण भी रहेंगे और जजमानी भी रहेगी। सहालग में मजे से घर में बैठे सौ-दो सौ फटकार लेते हैं। कभी भाग लड गया, तो चार-पाँच सौ मार लिया। कपडे, बरतन, भोजन अलग। कहीं-न-कहीं नित ही कार परोजन पडा ही रहता है। कुछ न मिले तब भी एक-दो थाल और दो-चार आने दक्षिणा मिल ही जाते हैं।"[१]

इसी प्रकार धर्म भी ग्राम समस्या के रुपमें 'गोदान' में उभरकर आता है —

'गोदान' में धर्म की ओट लेकर चलाए जानेवाले महाजनी शोषण का चित्रण किया गया है। पं.दातादीन का रुप ऐसा ही है। वह जाति से ब्राह्मण हैं, किन्तु कर्म से बनिया। सूदखोरी ने धनार्जन करना भी उसका पेशा है। वह मुख से अपने को ब्राह्मण सिध्द करता है, पर कर्म से होरी महतो का महाजन है और उसका भरपूर शोषण करता है।'[२]

धर्म होरी के जीवन का शोषण करता है, परंतु वह शांत भाव से सब स्वीकार कर लेता है। दातादीन होरी को ऋण देता है। वह धर्म के नाम पर होरी को धमकाता है —

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२०६, सरस्वती प्रेस, २।४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ.बदरी प्रसाद - प्रगतिवादी हिन्दी उपन्यास - पृ.६७ ओम प्रकाशन, ३०-बी, केवल पार्क एक्सटेंशन, आजादपुर, दिल्ली-३३, प्रथम संस्करण - १९८७

' मैं ब्राह्मण हूँ, मेरे रुपए हजम करके तुम चैन न पाओगे। मैंने ये सत्तर रुपए भी छोड़े, अदालत भी न जाऊँगा, जाओ। मगर मैं ब्राह्मण हूँ तो अपने पूरे दो सौ रुपए लेकर दिखा दूँगा। और तुम मेरे व्दार पर आवोगे और हाथ बाँधकर दोगो।'[१]

परंपरागत किसानी संस्कारों में बँधे होरी का मन ममभीत हो उठता है। दातादीन के ब्राह्मणत्व का जादू होरी के सर चढकर बोलने लगता है। होरी आर्त स्वर में कहता है —

' लेकिन ब्राह्मण के रुपए। उसकी एक पाई भी दब गयी, तो हड्डी तोड़कर निकलेगी। भगवान न करें कि ब्राह्मण का कोप किसी पर गिरे। बंस में कोई चुल्लू भर पानी देनेवाला, घर में दिया जलानेवाला भी नहीं रहता। उसका धर्मभीरु मन त्रस्त हो उठा। उसने दौड़कर पण्डितजी के चरण पकड़ लिए और आर्त स्वर में बोला-महाराज, जब तक मैं जीता हूँ, तुम्हारी एक-एक पाई चुकाऊँगा। लड़कों की बातों पर मत जाओ।'[२]

होरी की धर्मभीरुता ही उसे दयनीय बना देती है। डाँड चुकाने में भी वह बिरादरी और धर्म के भय से विवश है। यह धर्म उसके जीवन में इतनी गहरी जड़े जमा चुका है कि वास्तविक स्थिति उसे उभरने नहीं देती। भाग्य में जो लिखा है, उसे भोगना ही है। ऐसे अंधविश्वास उसे मृत्यु के हाथों सौंप देते है। होरी जीवन भर संघर्ष करता है और जीवन के अन्त में वह धर्म के हाथों उपहास का पात्र बनता है —

' अंध विश्वासों और धार्मिक रुढियों से ग्रस्त रहने के कारण वे सहिष्णु बन गए थे और हर जुल्म को अपना कर्मफल मानकर चुपचाप सह लेते थे। कर्मफल के नामपर वे जमींदार, शासक, पंडित, पुरोहित, महाजन तथा शोषक धर्म सब को ओढे हुए थे तथा जान लेवा सामाजिक प्रथाओं को भी ढो रहे थे।

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१८४ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ प्रेमचंद गोदान - पृ.१८४ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

'गोदान' में पंडित दातादीन जीवन भर तो होरी का खून चूसता ही है उसके मरने के बाद भी गोदान के नाम पर उसकी रही सही कमाई चूस लेता है।'[१]

'धार्मिक भावनाएँ उसे इतना संत्रस्त रखती हैं कि वह प्रत्येक कोटि के अन्याय को स्वीकार करता चला जाता है।'[२]

गोबर ने दातादीन पर व्यंग्य करते हुए ब्राह्मणों के जजमानी शोषण की प्रक्रिया को भी स्पष्ट किया है —

"तुम्हारे घर में किस बात की कमी है महाराज, जिस जजमान के द्वार पर जाकर खडे हो जाओ, कुछ न कुछ मार ही लाओगे। जनम में लो, मरन में लो, सादी में लो, गमी में लो, खेती करते हो, लेन-देन करते हो, दलाली करते हो, किसीसे कुछ भूल-चुक हो जाय, तो डाँड लगाकर उसका घर लूट लेते हो। इतनी कमाई से पेट नहीं भरता ? क्या करोगे बहुत सा धन बटोरकर कि साथ ले जाने की कोई जुगुत निकाल ली है।"[३]

'ब्राह्मण भारतीय किसान का परंपरागत शोषक है। सैकडों वर्षों से भारतीय समाज में ऐसी परंपराएँ चल रही हैं, जिसके कारण ब्राह्मण का शोषण वैध बन गया है। किसान इस शोषण को शोषण नहीं समझता और न पण्डितजी ही इसे शोषण समझते हैं। प्रेमचंदजीने इस परंपरागत शोषण को शोषण के रुपमें दिखाया है। पंडे-पुजारियों का यह शोषण 'दान' के रुप में होता है। इसमें देने वाला लेने वाले पर कोई उपकार नहीं करता, बल्कि उल्टे लेनेवाला दान लेकर देनेवाले पर उपकार करता है।'[४]

---

१ संपादक - दयानंद पांडेय - प्रेमचंद व्यक्तित्व और रचनादृष्टि -पृ.८८ भावना प्रकाशन, दिल्ली-९२, प्रथम संस्करण - १९८२.

२ प्रतापनारायण टंडन - प्रेमचंद - पृ.७६ - सामयिक प्रकाशन, ३५४३ - जटवाडा, दरियागंज, दिल्ली-६, सं.१९७८

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१७७ - सरस्वती प्रेस, २।४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

४ डॉ.रामबक्ष - प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२०१-२०२ वाणी प्रकाशन, ६१-एफ, कमलानगर, दिल्ली-७

प्रथम संस्करण - १९८२

प्रेमचंदजी के समय सामान्य जनता का यह वर्ग धर्म के नामपर शोषण करता था परंतु सामान्य जनता इसे ही अपने उध्दार के लिए,पापों से बचने के लिए किया गया दान धर्म मानती थीं —

` शोषण पुजारी और पुरोहित करते हैं जो दान तथा अंधविश्वास व्दारा अमानवीय ढंग से लूटते हैं।`[१]

` पंडित, पुजारी,महन्त,तत्कालीन परिवारों को धर्म की आड में बुरी तरह ठग रहे थे।`[२]

भारतीय किसान में अंधश्रध्दा, धर्मभीरुता होने के कारण,आधुनिक कानून के विरुध्द अपने ब्राह्मणवाद को` गोदान` में दातादीन खडा करता है। दातादीन ने होरी को तीस रुपये सूद पर दिये थे, वे सूद मिलाकर दो सौ रुपये हो गये। दातादीन जब रुपये मांगता है तो होरी उसे उतने रुपये देने की इच्छा व्यक्त करता है परंतु गोबर उसे कानूनी सूद देना चाहता है। तो दातादीन कहता है.—

` सुनते हो होरी, गोबर का फैसला ? मैं अपने दो सौ छोड़के सत्तर रुपए ले लूँ, नहीं अदालत करूँ। इस तरह का व्यवहार हुआ तो के दिन संसार चलेगा ? और तुम बैठे सुन रहे हो, मगर यह समझ लो, मैं ब्राह्मण हूँ,मेरे रुपए हजम करके तुम चैन न पाओगे। मैंने यह सत्तर रुपए भी छोडे , अदालत भी न जाऊँगा, जाओ। मगर मैं ब्राह्मण हूँ, तो अपने पूरे दो सौ रुपए लेकर दिखा दूँगा। और तुम मेरे व्दार पर आवोगे और हाथ बांधकर दोगे[३]।`

इस तरह से धमकाने का इच्छित परिणाम होता है। यह महाजनी शोषण है लेकिन इसके पीछे धर्म की भावना दबी हुई है।` गोदान` में गोबर

---

१ रमेश कुंतल मेघ : वाग्मी हो लो। पृ.७६
पंचशील प्रकाशन,फिल्म कालोनी,चौडा रास्ता, जयपुर-३,प्रथम संस्करण - १९८४

२ डॉ.राजेन्द्रकुमार शर्मा - प्रेमचंद परंपरा की कहानियों में पारिवारिक एवं सामाजिक चित्रण, पृ.१५५,प्रगति प्रकाशन, बंतुल बिल्डिंग,आगरा-३,प्रथम संस्करण - १९८४

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१८४,सरस्वती प्रेस,२। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

और झुनिया के सम्बन्ध से बिरादरी के पंचों ने होरी पर सौ रुपये नकद और तीस मन अनाज की डाँड लगा दी। बिरादरी की पंचायत से पहले ही चार-पाँच मुखिया मिलकर फैसला कर लेते हैं, जो पंचायत में घोषित होता है। होरी का यह कथन पंचायत का उपहास करता हुआ महसूस होता है --

'तू क्यों बोलती है धनिया। पंच में परमेसर रहते हैं। उनका जो न्याय है, वह सिर आँखों पर।'[१]

इस तरह हम देखते हैं कि --

'धार्मिक स्थानों, मठों, साधु सन्तों के प्रति अब भी श्रध्दा रही पर कहीं-कहीं उनके प्रति विद्रोह भी दिखाई देने लगता है।'[२]

प्रेमचंदजी का ईश्वर में विश्वास नहीं था। उन्होंने कहीं भी धर्म के आडम्बरपूर्ण कर्मकाण्डों पर अपनी आस्था प्रकट नहीं की --

'वह धर्म जिसको कर्मफल और ईश्वरेच्छा की आड में स्वार्थ साधन बनाया हुआ है, उसका उन्होंने सदैव भण्डाफोड किया है।'[३]

मुंशी प्रेमचंदजी ने 'गोदान' में रुढिवादी धर्म पर मानव धर्म की विजय मातादीन के माध्यम से दिखलायी है --

'रुढिवादी समाज-धर्म एवं मानव धर्म में संघर्ष होता है और अन्तत: मानव धर्म की विजय होती है। मातादीन रुढिवादी धर्म त्यागकर सिलिया को स्वीकार करता है।'[४]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१०८ - सरस्वतीप्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ.हेमराज 'निर्मम' - हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग - पृ.७८ विभू प्रकाशन, साहिबाबाद-५, प्रथम संस्करण अगस्त - १९७८

३ डॉ.कलावती प्रकाश - महासमरोत्तर हिन्दी उपन्यासों में जीवन दर्शन, पृ.३२, श्याम प्रकाशन, फिल्म कलोनी, जयपुर-३, प्रथम संस्करण - १९८७

४ डॉ.कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद- पृ.२५७ अभिनव प्रकाशन, २१-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-२ प्रथम संस्करण - १९७९

'गोदान' में एक स्थान पर किसान के सभी शोषक इकट्ठा होते हैं। हीरा होरी की गाय को विष देता है और कहीं भाग जाता है। सारे गाँव में यह हलचल मच गयी। रायसाहब का कारिन्दा नोखेराम आया, पण्डित दातादीन आये, महाजन झिंगुरीसिंह आये, पटेश्वरी भी आये। इस मामले पर सभी ने अपने-अपने विचार प्रकट किये परंतु पण्डित दातादीन धर्म के नाम से धमकाते हुए कहते है —

'यह बात साबित हो गई, तो उसे हत्या लगेगी। पुलिस कुछ करें या न करें, धरम तो बिना दण्ड दिये न रहेगा।'[१]

इससे स्पष्ट होता है कि दातादीन महाजन होनेपर भी वह पण्डित की अधिकार से धमकाना और शोषण करना चाहते है —

'तथापि ये धर्मनिष्ठा होने का दावा अवश्य करते और इसका परिचय वे पूजा-पाठ, स्नान-ध्यान आदि कृत्यों व्दारा और कभी धर्मशाला, पाठशाला, कुआँ आदि बनवाकर दिया करते थे।'[२]

प्रेमचंदजी शोषण करनेवाले धर्म के ठेकेदारों को दोषी ठहराने की अपेक्षा सनातन धार्मिक रुढियों को दोषी मानने के पक्ष में है। धर्म किसानों को चूसने का एक रुप है —

'वर्ग - समाज में धर्म शोषण का मुख्य आधार है। पूँजी और धर्म का गठबन्धन वर्ग समाज की विशेषता है। जमींदार और पूँजीपति लूट की दौलत को छिपाने के लिए जनता की आँखों में धूल झोंकने हेतु मंदिर बनवाकर या मंदिर जाकर बगुला भगत बनने का नाटक किया करते हैं। किन्तु जब मंदिर हो लूट का मालिक ही, पुजारी हो जमींदार ही तो फिर धर्म की ओट में लूट का कहना क्या ?'[३]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.९३ - सरस्वती प्रेस, २।४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ.राजेन्द्र पंजियार - हिन्दी कथा साहित्य पूर्व परिच्छेद- पृ.१२८ अंकुर प्रकाशन, १। ३०१७, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२, प्रथम संस्करण - १९८५

३ संपादक - डॉ.कँवरपाल सिंह सव्यसाची - प्रेमचंद और जनवादी साहित्य की परंपरा, पृ.१३१, माणा प्रकाशन, नई दिल्ली-६३ प्रथम आवृत्ति - १९८१

जाति व्यवस्था और भेद भाव —

' प्रेमचंद ने अपने पात्रों की जातिगत विशिष्टताओं को अधिक उभार कर प्रस्तुत नहीं किया है, बल्कि विभिन्न जाति के किसानों में पाई जानेवाली वर्गगत समानताओं पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है। उनके साहित्य में मोटे तौर पर तीन तरह के किसान मिलते हैं। यहाँ कुछ ऐसे किसान हैं, जो खुद खेती का काम नहीं करते। इनके पास ज्यादा जमीन जोतने का अधिकार होता है। ये बड़े किसान अधिकतर ऊँची मानी जाने वाली जातियों के होते हैं। पं.दातादीन जैसे ब्राह्मण किसान इसी वर्ग में आते हैं। समाज पर इनका वैचारिक और आर्थिक प्रभुत्व रहता है।'[१]

' इनके अलावा कुछ ऐसे किसान भी प्रेमचंद की रचनाओं में हैं, जिसके पास जमीन जोतने का अधिकार नहीं होता, बल्कि दूसरे की जमीन पर मजदूरी करते हैं।[२]

' भारत में (प्रेमचंद काल में) अछूत मानी जाने वाली जातियों के पास जमीन नहीं के बराबर होती है। भारत में जाति-व्यवस्था की अपनी सामाजिक और धार्मिक परंपराएँ है, जिनके अनुरुप उनके अधिकार और कर्तव्य निश्चित हैं।[३]

भारतीय किसान परंपरागत असमानता के संस्कृति पर आधारित समाज में जीवन जीते हैं। वे इस असमानता को स्वाभाविक, ईश्वर निर्मित मानते हैं। ' गोदान' के किसान पात्र भी इसी तरह के हैं। किसानों के मनमें इस असमानता से विद्रोह के भाव नहीं आते। ' गोदान' का होरी रायसाहब के यहाँ जाकर वापस आता है तो गोबर उसे कहता है कि तुम रोज-रोज मालिकों की खुशामद करने क्यों

---

१ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२१८-२१९
वाणी प्रकाशन, ६१-एफ, कमलानगर, दिल्ली-७,
प्रथम संस्करण - १९८२

२ - वही- पृ.२१९

३ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२१९
वाणी प्रकाशन, ६१-एफ, कमलानगर, दिल्ली-७
प्रथम संस्करण - १९८२

जाते हो ? तब होरी उससे कहता है —

` सलामी करने न जायँ, तो रहे कहाँ ? भगवान ने जब गुलाम बना दिया है, तो अपना क्या बस है ?`[१]

` परंपरागत जीवन-प्रणाली के अनुसार जीवन जीनेवाला प्रत्येक हिंदू किसान ब्राह्मण कोश्रेष्ठ मानता है। ब्राह्मण ज्ञानी और पवित्र होता है, उसे कष्ट देने से ज्यादा पाप लगता है, ब्राह्मण के पवित्र रुपये न चुकाने से परलोक बिगडता है, आदि-आदि धारणाएँ किसानों में प्रचलित है।`[२]

इसका कारण है किसानों का अज्ञान तथा निरक्षर रहना और इसीकारण ही` गोदान` में होरी दातादीन ब्राह्मण को ३०।- रुपये के बदले दो सौ रुपये देने के लिए तैयार हो जाता है। परंतु आधुनिक विचारों का गोबर इसका विरोध करता है। दातादीन इस मिथ्यापन को जानते है लेकिन धर्म के नाम पर अधिक धन कमाने की लालसा नहीं छोडते।

` प्रेमचंद ने अछूतों की समस्या को आर्थिक और सामाजिक दोनों दृष्टियों से उपस्थित किया है। उन्होंने इस समस्या को इस रुप में चित्रित किया है जिससे ब्राह्मण और शूद्र के बीच की असमानता पर चोट पडे।`[३]

` गोदान` में मातादीन सिलिया चमारिन को रखेल की तरह रखे हुए है फिर भी अपना धर्म बनाए हुए है —

` दातादीन का लडका मातादीन एक चमारिन से फँसा हुआ था। इसे सारा गाँव जानता था, पर वह तिलक लगाता था, पोथी-पत्रे बाँचता था, कथा-भागवत कहता था, धर्म-संस्कार करता था। उसकी प्रतिष्ठा में जरा भी कमी न थी।

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१६ - सरस्वती प्रेस, २।४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२१९
वाणी प्रकाशन, ६१-एफ, कमलानगर, दिल्ली-७
प्रथम संस्करण-१९८२

३ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२१९-२२०
वाणी प्रकाशन, ६०-एफ, कमलानगर, दिल्ली-७
प्रथम संस्करण १९८२

वह नित्य स्नान-पूजा करके अपने पापों का प्रायश्चित कर लेता था।'[१]

' पं.दातादीन के पुत्र मातादीन ने युवति सिलिया चमारिन को फँसा लिया। परंतु उस गरीब की बेटी का तन और मन दोनों लेकर भी बदले में वह लम्पट मातादीन कुछ न देना चाहता था।'[२]

मातादीन स्नान करके भोजन ग्रहण करता है और ईश्वर का भक्त बना रहता है। पवित्रता और ब्राह्मणत्व की रक्षा के लिए और चाहिए भी क्या ?

' धार्मिक - कर्मकाण्ड, अनुष्ठान, पूजा आदि तो भारतीय परिवार-समाज के रक्त में अन्तर्निहित है। और वर्ण-व्यवस्था, जाति-प्रथा, अस्पृश्यता आदि को अपना गौरव मानता रहा है, अत: इन बुराइयों में उपार्जित-समस्याएँ उसके स्वरूप को अक्षुण्ण किस प्रकार से रहने दे सकती हैं ?'[३]

उसका धर्म खान-पान, छुआ-छूत के विचार पर टिका हुआ है, उसने समझा है हमारा धर्म है भोजन अगर भोजन पवित्र रहे तो हमारे धर्म पर कोई आँच नहीं आ सकती --

' हमारे ऊपर क्या हँसेगा कोई, जिसने अपने जीवन में एक एकादशी भी नागा नहीं की, कभी बिना स्नान-पूजन किए मुँह में पानी नहीं डाला। नेम का निभाना कठिन है। कोई बता दे कि हमने कभी बाजार की कोई चीज खायी हो, तो उसकी टाँग की राह निकल जाऊँ। सिलिया हमारी चौखट नहीं लाँघने पाती, चौखट, बरतन-भाँडे छूना तो दूसरी बात है।' [४]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१०५- सरस्वती प्रेस, २।४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ.बदरी प्रसाद - प्रगतिवादी हिन्दी उपन्यास - पृ.७५ ओम प्रकाशन, ३०-बी, केवल पार्क, एक्स्टेंशन, आजादपुर, दिल्ली-३३, प्रथम संस्करण - १९८७

३ डॉ.राजेन्द्रकुमार शर्मा - प्रेमचंद परंपरा की कहानियों में पारिवारिक एवं सामाजिक चित्रण, पृ.१३५, प्रगति प्रकाशन, बेतुल बिल्डिंग, आगरा-३, प्रथम संस्करण - १९८४

४ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२०६, सरस्वती प्रेस, २।४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

`छुआछूत का मसला, जो गृह्युध्द की संभावना पैदा कर रहा था, हल हुआ, किन्तु सम्पूर्ण देश से अछूतपन का भाव जड़मूल से खत्म होने की समस्या बनी रही। समाज में ऐसे पोंगापंथी लोग विराज रहे थे, जो मंदिरों में अछूतों के प्रवेश के कट्टर विरोधी थे। मस्जिदों, गिरजाघरों और गुरुव्दारों में प्रवेश के लिए उनके धर्माचार्यों ने कोई जातिगत प्रतिबंध डालने की कल्पना भी नहीं की थी, किन्तु हिन्दु धर्म के ठेकेदारों ने अवर्णों के लिए मंदिर प्रवेश महान अपराध मान लिया था।`[१]

`छुआछूत, जिसका जन्म सामन्ती अभिजात्य के झूठे दम्भ के कारण हुआ, पारिवारिक टूटन का एक उल्लेखनीय कारण रहा है।`[२]

इतना ही उसके लिए काफी था। इसके बाद तो वह गाँव में हर तरह की लम्पटता और धूर्तता कर सकता था। हर बहू-बेटी पर कुदृष्टि डाल सकता था। इससे उसके धर्म पर कोई आँच नहीं आती थी।

`मुंशी प्रेमचंद ने हरिजनों और अस्पृश्यों में नव-चेतना के जागरण का आवाहन करते हुए अपने अनेक उपन्यासों में उनके लिए विभिन्न पात्रों को कटिबध्द और सेवारत दिखाया है।`[३]

`गोदान' में मातादीन सिलिया व्दारा मुठ्ठी भर अनाज देने के कारण उसका अपमान करता है तो चमारों ने मातादीन के मुँह में हड्डी डालकर उसका धर्म भ्रष्ट करना चाहा परंतु फिर भी प्रायश्चित करने पर वह फिर पवित्र ब्राह्मण बना रहता है —

---

१ डॉ.राजेंद्र पंजियार - हिन्दी कथा साहित्य पूर्व परिच्छेद - पृ.१३०, अंकुर प्रकाशन, १। ३०१७, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२, प्रथम संस्करण - १९८५

२ डॉ. कमला गुप्ता - हिन्दीउपन्यासों में सामंतवाद - पृ.३०८ अभिनव प्रकाशन, २१-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-२ प्रथम संस्करण - १९७९

३ डॉ.अरुणा चतुर्वेदी - गाँधी विचारधारा और हिन्दी उपन्यास-पृ.१०३ कल्पकार प्रकाशन, ५२, बादशाह नगर, लखनऊ-७ प्रथम संस्करण - १९८३

`गाँव के चमारों ने मातादीन के मुँह में हड्डी का टुकडा जबरदस्ती से डालकर उसका धर्म छिन लिया था। किन्तु प्रायश्चित करने से दोष या पाप दूर हो जाता था। मातादीन ने इसके लिए तीन सौ रुपये खर्च किये।'[१]

`ब्राह्मणों के बाद समाज में दूसरा स्थान क्षत्रियों का है, जो आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से शक्तिशाली हैं। इनका काम समाज की रक्षा करना है। ये अधिकतर जमींदार होते हैं और परंपरा से `राज्य` को भोगनेवाला वर्ग है।'[२]

`गोदान` में रायसाहब इसीतरह के वर्ग में आते हैं --

`पिछले सत्याग्रह संग्राम में रायसाहब ने बडा यश कमाया था। कौंसिल की मेंबरी छोडकर जेल चले गये थे। तब से उनके इलाके के आसामियों को उनसे बडी श्रध्दा हो गयी थी। यह नहीं कि उनके इलाके में असामियों के साथ कोई खास रियायत की जाती हो, या डाँड या बेगार की कडाई कुछ कम हो, मगर यह सारी बदनामी मुख्तारों के सिर जाती थी। रायसाहब की कीर्ति पर कोई कलंक न लगता था। वह बेचारे तो उसी व्यवस्था के गुलाम थे।'[३]

रायसाहब सदैव ही दो मुखौटे लगाये रहते हैं। वह धर्मपालन भी करना चाहते हैं और घण्टों पूजा-पाठ भी करते है। हर वर्ष धूमधाम से रामलीला करते है। किसानों से शगुन के लिए रुपये लेते हैं। समय आने पर अन्य तरीकों से बेगार भी लेते हैं। एक स्थानपर रायसाहब कहते है --

`मुझे विश्वास है, हजारों की रकम निकलेगी। अगर आपको स्वदेशी-स्वदेशी चिल्लाकर विदेशी दवाओं और वस्तुओं का विज्ञापन छापने में शरम नहीं

---

१ डॉ.ह.के.कडवे - हिन्दी उपन्यासों में आँचलिकता की प्रवृत्ति -पृ.२१८, अन्नपूर्णा प्रकाशन,१०६। १५४,गाँधीनगर,कानपुर-१२, प्रथम संस्करण - १९७८

२ डॉ.रामबक्ष - प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२२० - वाणी प्रकाशन,६१-एफ,कमलानगर,दिल्ली-७ प्रथम संस्करण - १९८२

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१३ - सरस्वती प्रकाशन,२। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज,दिल्ली-२

आती, तो मैं अपने असाम्मियों से डाँड, तावान और जुर्माना लेते क्यों शरमाऊँ ? यह न समझिए कि आप ही किसानों के हित का बीडा उठाए हुए है। मुझे किसानों के साथ जलना-मरना है, मुझसे बढकर दूसरा उनका हितेच्छु नहीं हो सकता, लेकिन मेरी गुजर कैसे हो ? अफसरों को दावतें कहाँ से दूँ, सरकारी चंदे कहाँ से दूँ, खानदान के सैकडों आदमियों की जरूरतें कैसे पूरी करूँ। ' [१]

जमींदार किसानों से अनेक तरह के बेगार लेते हैं। लगान बढ जाता है तो जमीन अपने अधिकार में कर ली जाती है। जमींदार खेती का पूरा कार्य किसानों से बेगार में कर लेता है परंतु उन्हें भोजन भी नहीं देता। शादी-ब्याह में किसान उपस्थित होते हैं, कुछ-न-कुछ भेंट देते हैं लेकिन उनके लिए खाना अलग बनाया जाता है और अपने से अलग स्थानपर खिलाया जाता है। जमींदार और किसान में मालिक-सेवक संबंध होता है।

' इनके बाद वैश्य जाति आती हैं, जो व्यापारिक और आर्थिक कर्म करती रहती है। ' [२]

' गोदान ' की दुलारी सहुआइन इस जाति के अन्तर्गत आती है —

' जब से साहुजी मर गए , दुलारी ने घर से निकलना छोड दिया। सारे दिन दूकान पर बैठी रहती थी और वहीं से सारे गाँव की खबर लगाती रहती थी। कहीं आपस में झगडा हो जाय, सहुआइन वहाँ बीच-बचाव करने के लिए अवश्य पहुँचेगी। आने रुपए सूद से कम पर रुपए उधार न देती थी। और यद्यपि सूद के लोभ में मूल भी हाथ में न आता था - जो रुपए लेता, खाकर बैठ रहता - मगर उसके ब्याज का दर ज्यों-का-त्यों बना रहता था। ' [३]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१४५ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ. रामबक्श : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२२० वाणी प्रकाशन, ६१-एफ, कमलानगर, दिल्ली-७ प्रथम संस्करण - १९८२

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२०४, सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

इस जाति को उतना श्रेष्ठ नहीं माना जाता है। बनिये जाति के लोग मुख्य रुपसे दुकान चलाते हैं और भाव-ताव करते है।' गोदान' में एक स्थान पर इसका विस्तृत वर्णन मिलता है —

' सारे गाँव का यही एक खलिहान था। कहीं मँडाई हो रही थी, कोई अनाज ओसा रहा था, कोई गल्ला तौल रहा था। नाई-बारी, बढ़ई, लोहार, पुरोहित, भाट, भिखारी, सभी अपने अपने जेवरें लेने के लिए जमा हो गए थे। एक पेड के नीचे झिंगुरीसिंह खाट पर बैठे अपनी सवाई उगाह रहे थे। कई बनिये खडे गल्ले का भाव-ताव कर रहे थे। सारे खलिहान में मंडी-की-सी रोनक थी।'[१]

' हिन्दू-समाज में निम्न जातियाँ अछूत मानी जाती है। इनका काम समाज की अन्य जातियों की सेवा करना है। ये सदियों तक खुद भी अपने को इसी काम के लिए नियुक्त मानते हैं। स्वाधीनता आन्दोलन और समाज-सुधार आन्दोलन के फलस्वरुप इनमें भी समानता की संस्कृति का उदय हो रहा है — इस ओर प्रेमचंद ने भी ध्यान दिया है।'[२]

' गोदान' में दातादीन ब्राह्मण का पुत्र मातादीन हरखू चमार की लडकी सिलिया को रखे हुए है। फिर भी अपना धर्म बनाए हुए है। एक दिन सिलिया मुठ्ठी भर अनाज देती है इसीसे मातादीन क्रोधित होता है। इससे चमार जाति के लोगों में और मातादीन में झगडा होता है। सिलिया की माँ मातादीन को चमार बनने के लिए कहती है। अपने साथ खाने-पिने के लिए कहती है। क्रोध में वह कहती है हमारी इज्जत लेते हो तो अपना धरम हमें दो। इस पर दातादीन बेटी ले जाने के लिए कहते है तो सिलिया की माँ जाति के भेद-भाव को स्पष्ट करती है —

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२०५ - सरस्वती प्रेस, २।४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ. रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२२० वाणी प्रकाशन, ६१-एफ, कमलानगर, दिल्ली-७ प्रथम संस्करण - १९८२

' खूब न्याव करते हो। तुम्हारी लड़की किसी चमार के साथ निकल गई होती और तुम इसी तरह की बातें करते, तो देखती। हम चमार हैं, इसलिए हमारी कोई इज्जत ही नहीं। हम सिलिया को अकेले न ले जायँगे, उसके साथ मातादीन को भी ले जायँगे, जिसने उसकी इज्जत बिगाड़ी है। तुम बड़े नेमी-धरमी हो। उसके साथ सोओगे, लेकिन उसके हाथ का पानी न पिओगे।'[१]

अछूतों के उध्दार के लिए प्रेमचंद समानता और सेवाभाव को आवश्यक मानते है। ' गोदान' में सिलिया चमारिन और मातादीन ब्राह्मण का सम्बन्ध दिखाकर प्रेमचंद जाति-व्यवस्था के भेद-भाव को समाप्त करना चाहते है। समाज में उच्च - नीच न मानते हुए मानव धर्म के नाते सभी मानव समान है। यह बतलाना चाहते है।

सिलिया एक बालक को जन्म देती है। इस खबर से मातादीन आनंदित होता है परंतु तीसरे दिन बच्चा मर जाता है। मातादीन दोनों हथेलियों पर शव को उठाता है और अकेले नदी के किनारे तक ले जाता है। उस दिन वह जरा भी नहीं लजाया, जरा भी नहीं झिझका --

' इस दु:ख के आघात से दोनों का मानस भी मिल जाता है। मातादीन सिलिया की झोपडी में जाकर उसके साथ रहने लगता है अब उसे धर्म अधर्म की चिन्ता नहीं है।'[२]

मातादीन धैर्य के साथ कहता है --

' मैं ब्राह्मण नहीं, चमार ही रहना चाहता हूँ। जो अपना धरम पाले, वही ब्राह्मण है, जो धरम से मुँह मोड, वही चमार है।'[३]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२०८- सरस्वती प्रेस,२। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ प्रा.मा.ए.गवली - प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरुष सम्बन्धों का अनुशीलन - पृ.६४,अन्नपूर्णा प्रकाशन, १२७। ११०० डब्ल्यू वन,साकेतनगर,कानपुर-१४, स.प्र.१९८५

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२८९ - सरस्वती प्रेस,२। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

' दैवी विडम्बना के फलस्वरुप जब शिशु की मृत्यु हो जाती है तब वह निर्भीक भाव से अपने सम्बन्ध की घोषणा कर देता है। वर्ण व्यवस्था के परंपरागत आदर्शों में उसकी आस्था समाप्त हो जाती है।'[१]

' गोदान' में गोबर झुनिया से सम्बन्ध रखता है। इस बीच झुनिया पाँच महीने की गर्भवती हो जाती है। होरी और धनिया मानव धर्म के नाते झुनिया को बहु के रुप में घरमें स्वीकार कर लेते हैं। होरी जैसे किसान के इस मानवीय कार्य की प्रशंसा करने के बदले दातादीन जैसे पण्डित और गाँव के मुखिया होरी को दण्डित करते हैं —

' गाँववालों ने होरी को जाति-बाहर कर दिया। कोई उसका हुक्का नहीं पीता, न उसके घर का पानी पीता है।' [२]

' गोदान' का लेखक पूछता है कि किस मापदण्ड से समाज मातादीन को कुछ न कहता या उसपर कोई जुर्माना नहीं लगाता और होरी पर दण्ड लगाया जाता है। जाति - व्यवस्था में भेद-भाव होने के कारण ही तो ऐसा होता है। समाज में मातादीन के लिए जो मापदण्ड है वह होरी या गोबर के लिए नहीं है। यह समाज में बहुत बडी असमानता है और इसपर प्रेमचंदजी ने तीखी चोट की है।

समाज में गोबर जैसा व्यक्ति झुनिया के साथ अनैतिक सम्बन्ध रखता है और बादमें उसे अपने घर में लाता है तो उसे जाति बाहर कर दिया जाता है। परंतु मातादीन ब्राह्मण सिलिया चमारिन के साथ अनैतिक सम्बन्ध रखकर उसे केवल रखेल की तरह रखता है तो समाज उसका कुछ बिगाड नहीं पाता। समाज में जाति भेद-भाव के बारे में यह बहुत बडी विडम्बना है।

---

१ प्रतापनारायण टंडन - प्रेमचंद - पृ.७१ - सामयिक प्रकाशन, ३५४३ जटवाडा, दरियागंज, दिल्ली-६ संस्करण - १९७८

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१०४- सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

इसतरह से प्रेमचंदजी ने समाज में जाति-व्यवस्था तथा भेद-भाव को नष्ट करके समानता का आदर्श उपस्थित किया है।

शादी-ब्याह एक धार्मिक कर्तव्य --

` उतरी भारत के ग्रामीण किसानों की सामाजिक परंपराओं का वर्णन प्रेमचंद ने किया है। जाति-व्यवस्था की जटिलता के कारण यहाँ क्लासिकल हिन्दू संस्कृति के अनुसार जीवन जीने वाले किसान नहीं मिलते। अलग-अलग जातियों ने अपनी आवश्यकता और सुविधा के अनुसार अपनी अलग परंपराएँ बना ली हैं, जो अब उनके बीच मान्य हो गयी हैं। शादी-ब्याह से संबंधित यहाँ अनेक ऐसी प्रथाएँ प्रचलित हैं, जिन्हें शुध्दतावादी ` हिन्दू कभी भी स्वीकार नहीं करेगा।`[१]

` ग्रामीण किसान के लिए शादी सिर्फ सेक्स सम्बन्ध का नैतिक रूप ही नहीं है, बल्कि एक धार्मिक कर्तव्य है। इसके अलावा किसान के लिए शादी आर्थिक कारणों से भी अनिवार्य है। इसी कारण किसान स्वेच्छा से कभी कुँआरा नहीं रहता। मजबूरी में उसे भले ही रहना पडे।`[२]

` गोदान` में मेहता अविवाहित रह सकता है लेकिन होरी के अविवाहित रहने की हम कल्पना नहीं कर सकते। होरी के दृष्टिसे एक व्यक्ति का घर में आना, एक कमानेवाला घर में बढ गया होता है। इसी दृष्टिसे किसान परिवार में विवाह को महत्व दिया जाता है।

` परिवार का मुखिया सभी बच्चों के शादी-ब्याह के लिए भी जिम्मेदार होता है। पिता या घर का मुखिया ही बच्चों के लिए योग्य जीवन-साथी चुनता

---

१ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२३०
वाणी प्रकाशन,६१-एफ,कमलानगर,दिल्ली-७
प्रथम संस्करण - १९८२

२ डॉ.रामबक्ष - प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२३१
वाणी प्रकाशन,६१ - एफ,कमलानगर,दिल्ली-७
प्रथम संस्करण - १९८२

है। इस प्रक्रिया में वह लड़के या लड़की की राय जानना आवश्यक नहीं समझाता। अपनी पहुंच के हिसाब से वह सगाई कर देता है।'[१]

किसान परिवारों में यह प्रथा हैं कि वह अपनी पुत्री का विवाह बचपन में ही करते हैं। होरी की पुत्री सोना की उमर सत्रह साल की होने पर भी अभी तक उसका विवाह नहीं हुआ इसी कारण होरी को उसके विवाह की चिन्ता सताती है --

' सोना सत्रहवें साल में थी और इस साल उसका विवाह करना आवश्यक था। होरी तो दो साल से इसी फिक्र में था, पर हाथ खाली होने से कोई काबू न चलता था। मगर इस साल जैसे भी हो, उसका विवाह करना ही चाहिए, चाहे कर्ज लेना पड़े, चाहे खेत गिरों रखने पड़े। और अकेली होरी की बात चलती, तो दो साल पहले हीविवाह हो गया होता।'[२]

किसान अपने लड़के या लड़की का विवाह अपने गाँव से नजदीक के गाँव के किसान से करता है। इसका कारण कदाचित यह है कि प्रेमचंदजी के समय आवागमन की असुविधा के कारण विवाह सम्बन्ध आस-पास के गाँवों से होता था। ' गोदान' में होरी की पुत्री सोना का विवाह सोनारीवाले के एक धनी किसान के लड़के से ठीक हुआ है।

' मैं तो सोनारीवालों से कह दूँगी, अगर तुमने एक पैसा भी दहेज लिया, तो मैं तुमसे ब्याह न करूँगी।'[३]

किसानों में शादी एक ही जाति में होती है। प्रेमचंदजी ने किसानों के अन्तर्जातीय विवाह का वर्णन नहीं किया है। ' गोदान' में मातादीन ब्राह्मण

---

१ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२३१
वाणी प्रकाशन, ६१-एफ, कमलानगर, दिल्ली-७
प्रथम संस्करण - १९८२

२ प्रेमचंद : गोदान - पृ.२१२-सरस्वतीप्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

३ प्रेमचंद : गोदान - पृ.२१६ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

सिलिया चमारिन के साथ अनैतिक संबंध रखे हुए है परंतु अपना धर्म बनाए हुए है। न तो वह उससे विवाह करता है, न उसे अपने घर में आने देता है। वह उसे रखेल की तरह रखे हुए है। लड़की लड़के में अनैतिक सम्बन्ध होने पर यदि लड़की को बिना विवाह के घर में बहु की तरह रख लिया तो उस परिवार को जाति बाहर कर दिया जाता है। 'गोदान' में गोबर और झुनिया का अनैतिक सम्बन्ध होता है। झुनिया गर्भवती हो जानेपर गोबर उसे घर में छोड़कर भाग जाता है। होरी उसे बहु रुपमें स्वीकार कर लेता है तो होरी को जाति-बाहर कर दियाजाता है और बिरादरी व्दारा उसपर दण्ड लगाया जाता है --

' दूसरे दिन गाँववालों की पंचायत बैठ गई। होरी और धनिया, दोनों अपनी किस्मत का फैसला सुनने के लिए बुलाए गए। चौपाल में इतनी भीड थी कि कहीं तिल रखने की जगह न थी। पंचायत ने फैसला किया कि होरी पर सौ रुपए नकद और तीस मन अनाज डाँड लगाया जाय।'[१]

आर्थिक कठिनाईयों के कारण किसान धार्मिक कर्तव्य विवाह को उचित ढंग से पूरा नहीं कर सकता --

' विवाह - शादी के अवसर पर ये सरल-उदार हृदय ग्रामीण विशेष रुप से अपनी मर्यादा का विचार रखते हैं। होरी ने अपनी बहनों के विवाह में तीन सौ बारातियों को भोज दिया और दहेज अलग। इसी कारण वह अपनी बेटी सोना के विवाह में भी ऋणी हो जाता है।'[२]

' गोदान' में होरी की स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाती है। वह अपनी छोटी पुत्री का विवाह योग्य वर ढूँढकर करना चाहता है परंतु आर्थिक कठिनाईयों

---

१ प्रेमचंद : गोदान - पृ.१०८ - सरस्वती प्रेस, २। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ.ज्ञान अज्ञाना : हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्यायें - पृ.१३४, जवाहर पुस्तकालय,सदर बाजार,मथुरा-२, प्रथम संस्करण १९७९

के कारण अपनी पुत्री का विवाह दो सौ रुपये वृध्द रामसेक से लेकर कर देता है, क्योंकि खेत बचाने के लिए उसे दो सौ रुपयों की आवश्यकता थी --

' आर्थिक दबावों से पीड़ित होकर किसान कई बार अपनी लड़की को बेच भी देता है। होरी ने दो सौ रुपये लेकर रुपा की शादी प्रौढ रामसेक से कर दी। पण्डित दातादीन ने इस शादी को तय करवाने में मध्यस्थता की भूमिका निभाई।'[१]

होरी अपनी पुत्री का विवाह तो कर देता है परंतु उसे अत्यंत मानसिक कष्ट होता है। प्रेमचंदजी ने होरी की इस मानसिक स्थिति की सशक्त अभिव्यक्ति की है --

' होरी ने रुपए लिये तो उसका हाथ काँप रहा था, उसका सिर ऊपर न उठ सका, मुँह से एक शब्द न निकला, जैसे अपमान के अथाह गढे में गिर पडा है और गिरता चला जाता है। आज तीस साल तक जीवन से लड़ते रहने के बाद वह परास्त हुआ है और ऐसा परास्त हुआ है कि मानो उसको नगर के व्दार पर खडा कर दिया है और जो आता है, उसके मुँह पर थूँक देता है।' [२]

कई बार गाँव में किसी लड़के की शादी में बहुत कठिनाई हो जाती है। धीरे-धीरे उसकी उम्र भी ढलने लगती है। ' गोदान ' में मातादीन सिलिया चमारिन को रखे हुए है इसीकारण उसका विवाह नहीं हो रहा है। एक स्थानपर दातादीन इस सम्बन्ध में झिंगुरसिंह के पास कहता है --

' समय-समय की परथा है और क्या। किसी में उतना तेज तो हो। बिस खाकर उसे पचाना तो चाहिए। वह सतजुग की बात थी, सतजुग के साथ गयी। अब तो अपना निबाह बिरादरी के साथ मिलकर रहने में है, मगर करुं क्या, कोई

---

१ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२३२
वाणी प्रकाशन, ६१-एफ, कमलानगर, दिल्ली-७
प्रथम संस्करण - १९८२

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२९५- सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

लड़कीवाला आता ही नहीं। तुम से भी कहा,औरों से भी कहा,कोई नहीं सुनता तो मैं क्या लड़की बनाऊँ।'[१]

किसानों के बच्चों की सगाई और शादी प्राय: बचपन में ही हो जाती है। बच्चे जब जवान होते हैं,तभी उनका गोना किया जाता है और उसी समय दुल्हा-दुल्हन मिल जाते हैं। विवाह को प्रेमचंदजी धर्म और प्रेम का बंधन मानते है —

' प्रेमचंद वैवाहिक रीति-रिवाजों को सारहीन समझाते हैं क्योंकि उनकी दृष्टिसे विवाह धर्म व प्रेम का बंधन है।'[२]

' गोदान' में होरी ने सोना की सगाई बचपन में ही कर दी थी और गोबर की सगाई करने की चिन्ता उसे सता रही थी।

पूजापाठ और धार्मिक विधि —

भारतीय किसान परंपरागत धर्म से प्रभावित होनेवाला है। किसान ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकारता है। ईश्वर न्याय देनेवाला है। सभी पर दया की दृष्टि रखनेवाला है ऐसा किसान का विश्वास है। ईश्वर पर अगाध श्रध्दा के कारण वह अपने ही हाथों अपनी लूट करवाता है। किसान अपने भाग्य पर भरोसा करता है, पाप से डरता है।' गोदान' में गोबर नये विचारों से प्रेरित है। गोबर न तो बडोंका सम्मान करता है और न ही वह चापूलसी की बातें पसंद करता है। अमीरों के धर्मपालन को वह व्यंग्य की दृष्टिसे देखता है। उसका विचार है कि वे अपने पाप को बचाने लिए यह सब ढोंग रचते है —

' ईश्वर के नामपर यथास्थिति को सार्वभौम और शाश्वत सिध्द किया जाता है, क्योंकि व्यवहारिक रुप से ईश्वर की धारणा व्दारा उन्हें लोगों को

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२०६ - सरस्वती प्रेस, २। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज,नई दिल्ली-२

२ डॉ.कलावती प्रकाश - महासमरोत्तर हिन्दी उपन्यासों में जीवन-दर्शन पृ.३०,श्याम प्रकाशन,फिल्म कलोनी,जयपुर-३ प्रथम संस्करण - १९८७

दास बनाये रखने में सुविधा होती है। ईश्वर की धारणा को सौंदर्य देकर उन जंजीरों को आकर्षक बनाने की कोशिश की जाती है जिससे वे मजदूरों और किसानों को जकड़ते हैं। ईश्वर की धारणा प्रतिक्रियावादी है, क्योंकि ' ईश्वर की धारणा ने हमेशा ही सामाजिक अनुभूतियों को कुंठित किया है और उन्हें सुलाया है तथा हमेशा जीवित की जगह मृत को प्रतिष्ठित किया है। यह धारणा हमेशा दासता (निकृष्ट और निरुपाय दासता) की प्रतीक रही है। ईश्वर की धारणा ने कभी व्यक्ति को समाज से नहीं जोड़ा। इसने हमेशा शोषित वर्ग के हाथ पैर जकड़ कर उसे शोषकों की महानता में आस्था के साथ जोड़ा है।'[१]

'गोदान' में रायसाहब धर्मपालन भी करना चाहते हैं और घण्टों पूजा पाठ भी करते हैं। हर वर्ष धूमधाम से रामलीला करवाते है —

' होरी ड्योढी पर पहुँचा तो देखा, जेठ के दशहरे के अवसर पर होनेवाले धनुष-यज्ञ की बड़ी जोरों से तैयारियाँ हो रही है, कहीं रंग-मंच बन रहा था, कहीं मंडप, कहीं मेहमानों का आतिथ्य गृह, कहीं दुकानदारों के लिए दूकानें। धूप तेज हो गई थी, पर रायसाहब खुद काम में लगे हुए थे। अपने पिता से संपत्ति के साथ-साथ उन्होंने राम की भक्ति भी पायी थी और धनुष यज्ञ को नाटक-का रुप देकर उसे शिष्ट मनोरंजन का साधन बना दिया था।'[२]

रायसाहब जैसे बड़े आदमियों को कोई मामूली-सा रोग हो जाय तो किस प्रकार पूजा-पाठ किया जाता है यह भी वे होरी के सामने स्पष्ट कर देते है —

' मामूली फुन्सी भी निकल आए, तो वह जहरबाद बन जाती है। अब छोटे सर्जन और मझोले सर्जन और बड़े सर्जन तार से बुलाए जा रहे हैं, मसीहुलमुल्क को लाने के लिए दिल्ली आदमी भेजा जा रहा है, मिरगाचार्य को लाने के लिए

---

१ सम्पादक - डॉ.कँवरपाल सिंह सन्यसाची - प्रेमचंद और जनवादी साहित्य की परंपरा - पृ.१२७, माणा प्रकाशन, नई दिल्ली-६३ प्रथम आवृत्ति १९८१

२ प्रेमचंद : गोदान - पृ.१३ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

कलकत्ता। उधार देवालय में दुर्गापाठ हो रहा है और ज्योतिषाचार्य कुण्डली का विचार कर रहे है और तन्त्र के आचार्य अपने अनुष्ठान में लगे हुए है।[१]

भारतीय किसान भाग्य पर भरोसा करता है। जो भी इस जन्म में भुगतना पड रहा है वह अपने पूर्व जन्म का फल है ऐसा मानता है। `गोदान` में होरी इसी प्रकार के विचार गोबर के सामने रखता है लेकिन नये विचारों का गोबर कहता है कि भगवान ने सब को बराबर बनाया है। बडे लोग जो दान-पुण्य, धर्म करते हैं वह अपने पाप को पचाने के लिए करते हैं। बाप-बेटे के वार्तालाप से पूजा-पाठ पर प्रकाश पडता है ---

` यह तुम्हारा भरम है, मालिक आज भी चार घण्टे रोज भगवान का भजन कहते है।`

` किस के बलपर यह भजन भाव और दान-धर्म होता है।`

` अपने बल पर।`

` नहीं, किसानों के बलपर और मजदूरों के बलपर। यह पाप का धन पचे कैसे ? इसलिए दान - धर्म करना पडता है, भगवान का भजन भी इसलिए होता है। भूखे-नंगे रहकर भगवान का भजन करें, तो हम भी देखें। हमें कोई दोनों जून खाने को दे, तो हम आठों पहर भगवान का जाप ही करते रहे। एक दिन खेत में ऊख गोडना पडे तो सारी भक्ति भूल जाय।`[२]

दातादीन ब्राह्मण का पुत्र मातादीन एक चमारिन के साथ सम्बन्ध रखे हुए था परंतु उसकी पूजा पाठ में किसी प्रकार की कमी नहीं थी --

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१५ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ वही प्रेमचंद - गोदान - पृ.१८ - सरस्वतीप्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

' वह तिलक लगाता था, पोथी-पत्रे बाँचता था, कथा-भागवत कहता था, धर्म-संस्कार करता था। उसकी प्रतिष्ठा में जरा भी कमी न थी। वह नित्य स्नान पूजा करके अपने पापों का प्रायश्चित कर लेता था।'[१]

इसीतरह 'गोदान' के लाला पटेश्वरी भी थोडी-सी धार्मिक विधि करते है --

' इसीतरह एक दिन लाला पटेश्वरी ने होरी को छेडा। वह गाँव में पुण्यात्मा मशहूर थे। पूर्णमासी को नित्य सत्यनारायण की कथा सुनते।'[२]

पण्डित नोखेराम भी भगवान की भक्ति करते है। जो उनके पिता से परंपरागत रुपसे चली आयी है --

' पण्डित नोखेराम कारकुन बडे कुलीन ब्राह्मण थे। इनके दादा किसी राजा के दीवान थे। पर अपना सब-कुछ भगवान के चरणों में भेंट करके साधु हो गए थे। इनके बाप ने भी राम-राम की खेती में उम्र काट दी। नोखेराम ने भी वही भक्ति तरके में पायी थी। प्रात:काल पूजा कर बैठ जाते थे और दस बजे तक बैठे राम-नाम लिखा करते थे।'[३]

' जो भी आज धर्म के नाम पर हो रहा है, सब अंधविश्वास है। यह सब मूर्खों को बहकाने के तरीके हैं।'[४]

प्रेमचंदजी एक स्थानपर धर्म को स्पष्ट करते हुए कहते है --

' उन्होंने गांधीवादी धार्मिक आदर्श से सहमति व्यक्त करते हुए यह स्वीकार किया है कि सच्चा धर्म तीर्थ,उपवास और कर्मकांड में नहीं है। इसके विपरीत

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१०५ - सरस्वती प्रेस,२। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१०६ - - वही -

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१०७ - - वही -

४ डॉ.कलावती प्रकाश : महासमरोत्तर हिन्दी उपन्यासों में जीवन - दर्शन पृ.३२ - श्याम प्रकाशन,फिल्म कलोनी,जयपुर-३, प्रथम संस्करण - १९८७

ईश्वर की सत्ता में आस्था रखते हुए जीव मात्र के प्रति सहिष्णुता का व्यवहार ही धर्म है।'[१]

गोबर जब पहली बार शहर से अपने गाँव वापस जा रहा था उसी समय सभी उसे विदा करने आ गये। उसमें सभी सम्प्रदाय के लोग थे। उनकी धार्मिक विधि का संकेत उसी स्थान पर मिलता है --

' गोबर ने सब को राम-राम किया। हिन्दू भी थे, मुसलमान भी थे, सभी में मित्रभाव था, सब एक-दूसरे के दु:ख दर्द के साथी। रोजा रखनेवाले रोजा रखते थे। एकादशी रखनेवाले एकादशी। कभी-कभी विनोद-भाव से एक-दूसरे पर छींटें भी उडा लेते थे। गोबर अलादीन की नमाज को उठा-बैठी कहता, अलादीन पीपल के नीचे स्थापित सैकडों छोटे-बडे शिवलिंग को बटखरे बनाता, लेकिन साम्प्रदायिक द्वेष का नाम भी न था।'[२]

ग्रामों में एक निश्चित महीने में धार्मिक ग्रंथों का पठन किया जाता है। उसी समय गाँव के सभी व्यक्ति उस ग्रंथों का श्रवण करने के लिए इकठ्ठा होते हैं। ' गोदान' में भी रामायण गान होता है --

' देहातों में साल के छ: महीने किसी-न-किसी उत्सव में ढोल -मजीरा बजता रहता है। होली के एक महीना पहले से एक महीना बाद तक फाग उडती है, आषाढ लगते ही आल्हा शुरु हो जाता है और सावन भादों में कजलियाँ होती है। कजलियों के बाद रामायण गान होने लगता है। सेमरी भी अपवाद नहीं है।'[३]

---

१ डॉ.अरुणा चतुर्वेदी - गांधी विचारधारा और हिन्दी उपन्यास - पृ.१५९, कल्पकार प्रकाशन, ५२, बादशाहनगर, लखनऊ-७, प्र.सं.१९८३

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१७० - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१८१ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

मातादीन एक दिन सिलिया द्वारा एक मुठ्ठी अनाज देने के कारण उसे भला-बुरा कहता है। उसी अवसर पर सिलिया के भाई और बाप मातादीन से लड़ते हैं। दो चमार मातादीन के मुँह में हड्डी डाल देते हैं। इससे ब्राह्मण का धर्म भ्रष्ट हो जाता है तो उसका प्रायश्चित करना दातादीन उचित समझाते है। प्रायश्चित के सम्बन्ध में बाप-बेटों में वार्तालाप होता है —

` सहृज्ञा जैसे उसने होश में आकर कहा - मेरे लिए अब क्या कहते हो दादा ?

दातादीन ने उसके सिर पर हाथ रखकर ढाढ़स देते हुए कहा — तुम्हारे लिए अभी मैं क्या कहूँ बेटा ? चलकर नहाओ खाओ, फिर पण्डितों की जैसी व्यवस्था होगी, वैसा किया जायगा। हाँ, एक बात है, सिलिया को त्यागना पड़ेगा। मातादीन ने सिलिया की ओर रक्त भरे नेत्रों से देखा - मैं अब उसका कभी मुँह न देखूँगा, लेकिन परासचित हो जाने पर फिर तो कोई दोष न रहेगा ?

` परासचित हो जाने पर कोई दोष-पाप नहीं रहता।`

` तो आज ही पण्डितों के पास जाओ।`

` आज ही जाऊँगा बेटा।`

` लेकिन पण्डित लोग कहें कि इसका परासचित नहीं हो सकता, तब ?`

` उनकी जैसी इच्छा।`

` तो तुम मुझे घरसे निकाल दोगे ?`

दातादीन ने पुत्र-स्नेह से विह्वल होकर कहा - ऐसा कहीं हो सकता है, बेटा। धन जाय, धरम जाय, लोक-मरजाद जाय, पर तुम्हें नहीं छोड सकता।`[१]

होरी अपना जीवन मजदूरी करके व्यतीत करने लगता है परंतु दुर्बलता के कारण वह अधिक परिश्रम करने की स्थिति में नहीं है। इसी तरह मजदूरी करते करते वह परलोक सिधर जाता है।

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२१०-२११ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

'धर्म के बाह्य रुपों पर बल देकर निरीह जनता पर अपने धर्माचारन और ब्राह्मणत्व की धौंस जमानेवाले समाज के प्रति 'गोदान' में असंतोष और तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की गई है। ब्राह्मण-समाज की धौंस के कारण भारतीय गरीब किसानों के मानस में ईश्वर का रुद्र और भयावह रुप ही छाया रहा। फलत: वे 'गोदान' के पं.दातादीन जैसे शोषकों के ब्राह्मणत्व की चक्की में आजीवन पिसते रहे। ईश्वर का रौद्र रुप उन्हें आता रहा और वे भाग्यवाद के शिकंजे में जकड़ते गए। 'मैं ब्राह्मण हूँ' -- ऐसा सदैव कहनेवाले दातादीन के कथन के इस अहंकार ने ही होरी जैसी किसान का शोषण कर उसे मजदूर बना डाला और अन्तत: मृत्यु के कगार पर भी ला खड़ा किया।'[१]

होरी के मृत्यु पश्चात् लोग धनिया को गो-दान करने कहते हैं --

'और कई आवाजें आयी - हाँ गो-दान करा दो, अब यही समय है। धनिया यंत्र की भाँति उठी, आज जो सुतली बेची थी, उसके बीस आने पैसे लायी और पति के ठंडे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली - महाराज, घर में गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका 'गोदान' है।'[२]

प्रेमचंदजी ने 'गोदान' में पूजापाठ तथा धार्मिक विधि का विधिवत् चित्रण नहीं किया। पात्रों के विशेताओं के साथ ही इसे चित्रित किया है। ब्राह्मण वर्ग के ढोंग को अभिव्यक्त करते समय का चित्रण अधिक है।

ब्राह्मण वर्ग का पाखण्ड --

'धार्मिक-कर्मकाण्ड, अनुष्ठान, पूजा आदि तो भारतीय परिवार-समाज के रक्त में अन्तर्विहित है। और वर्ग-व्यवस्था, जाति प्रथा, अस्पृश्यता आदि को अपना

---

१ डॉ.बदरी प्रसाद - प्रगतिवादी हिन्दी उपन्यास - पृ.७६
आम प्रकाशन, ३०-बी, केवल पार्क एक्स्टेंशन, आजादपुर, दिल्ली-३३, प्रथम संस्करण - १९८७

२ प्रेमचंद- गोदान- पृ.३०० - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

गौरव मानता रहा है, अत: इन बुराईयों में उपार्जित-समस्याएँ उसके स्वरूप को अक्षुण्ण किस प्रकार से रहने दे सकती हैं ? और फिर प्रेमचंद युग तो ऐसे संक्रामक काल की यात्रा कर रहा था, जहाँ इन ऐसी समस्याओं का अधिकाधिक अवश्यंभावी था ।[१]

धार्मिक परिस्थिति का उल्लेख 'गोदान' में विशेष रूपसे हुआ है। दातादीन के माध्यम से उसे सारे पाखण्ड का प्रदर्शन कराया गया है जो धर्म के नामपर इस युग में हो रहा था। केवल कर्मकाण्ड को धर्म मानकर अशिक्षित जनता का शोषण हो रहा था। 'गोदान' का कथानक यह स्पष्ट कर देता है कि किसान आर्थिक शोषण के साथ इस धार्मिक शोषण से पीड़ित है। स्नान, पूजा-पाठ, तिलक-धारण, कथा-पाठ, अस्पृश्यता, पवित्र भोजन यही धर्म के लक्षण माने जाते हैं। अज्ञानी कृषक इन्हीं लक्षणों को देखकर किसी को धर्मात्मा समझ बैठता है। बिरादरी को मात देने से, ब्राह्मणों को भोज देने से पाप छूट जाता है, उध्दार हो जाता है - इन धार्मिक विचारों से दीन-हीन प्रजा संत्रस्त की जा रही है। निर्धनों का शोषण करनेवाले सत्यनारायण की कथा सुनकर पुण्यात्मा कहलाने लगते हैं।

'धर्मध्वजी महंत, पुरोहित, पंडे, चेले व्दारा धर्म की आड में धर्मप्राण अशिक्षित, भोली-भाली जनता का कैसा शोषण होता रहा है और अनाचार-व्यभिचार की कैसी शर्मनाक घटनाएँ होती रही हैं, इसकी चर्चा बिहार के आलोच्ययुगीन कथा-साहित्य में मिलती है।'[२]

मातादीन ब्राह्मण के माध्यम से 'गोदान' में धर्म के आडम्बर और ढोंग को तीखे रूपमें स्पष्ट करने का सफल प्रयास प्रेमचंदजी ने किया है। वह

---

१ डॉ.राजेंद्रकुमार शर्मा : प्रेमचंद परंपरा की कहानियों में पारिवारिक एवं सामाजिक चित्रण - पृ.१३५
प्रगति प्रकाशन,बेतुल बिल्डिंग,आगरा-३,
प्रथम संस्करण - १९८४

२ डॉ.राजेन्द्र पंजियार - हिन्दी कथा साहित्य पूर्व परिच्छेद - पृ.१३१
अंकुर प्रकाशन,१।३०१७,रामनगर,मंडोली रोड,
शाहदरा,दिल्ली-३२,प्रथम संस्करण-१९८५

दातादीन का पुत्र है। दातादीन नाममात्र को ही ब्राह्मण था नहीं तो दुनिया के सारे छल और प्रपंच उसमें भरे हुए थे। उसके सम्बन्ध में गोबर एक स्थानपर ठीक ही कहता है —

' तुम्हारे घर में किस बात की कमी है महाराज, जिस जजमान के व्दार पर जाकर खडे हो जाओ, कुछ न कुछ मार ही लाओगे। जनम में लो, मरन में लो, सादी में लो, गमी में लो, खेती करते हो, लेन-देन करते हो, किसी से कुछ भूल-चूक हो जाय, तो डाँड लगाकर उसका घर लूट लेते हो। इतनी कमाई से पेट नहीं भरता ?'[१]

' प्रेमचंद ने इसमें सामाजिक ,धार्मिक रुढियों एवं परंपराओं पर जबर्दस्त प्रहार किया है।'[२]

दातादीन असल में ब्राह्मण के वेश में कमटी था और उसी वातावरण में मातादीन का चारित्रिक विकास होता है। जाति का मिथ्याभिमान, ढोंग, आडम्बर और स्वार्थलिप्सा उसमें भी कूट-कूट कर भरी हुई है —

' एक ओर धूर्त पंडितों, पुरोहितों का ईश्वर और धर्म के नाम पर किसानों को लूटते रहने का षड्यंत्र है तो दूसरी ओर अपढ और रुढिवादी किसानों की ईश्वर और धर्म के प्रति अटूट आस्था के फलस्वरुप लुटते रहने की प्रवृति।'[३]

मातादीन में विलासिता का भी अधिक्य है। वह इसकी पूर्ति के लिए सिलिया चमारिन को माध्यम बनाता है। वह सिलिया से कहता है कि जब तक दम में दम है, तुझे ब्याहता की तरह रखूँगा। परंतु यह उसका छल था, जिसकी

---

१ प्रेमचंद : गोदान - पृ.१७७ - सरस्वती प्रेस, २। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ.ह.के.कडवे - हिन्दी उपन्यासों में आंचलिकता की प्रवृत्ति - पृ.२१९ अन्नपूर्णा प्रकाशन,१०६। १५४,गांधीनगर,कानपुर-१२ प्रथम संस्करण - १९७८

३ संपादक - दयानंद पांडेय - प्रेमचंद व्यक्तित्व और रचनादृष्टि - पृ.८७ भावना प्रकाशन,दिल्ली-९२, प्रथम संस्करण - १९८२

मृगतृष्णा में भोली-भाली सिलिया छली जाती । मातादीन ब्राह्मण पुत्र था । अपनी काम-पिपासा और वासना की तृप्ति के लिए वह सिलिया को बराबर भ्रम में रखता है और ऊँचे-ऊँचे सपने दिखाता है । परंतु सिलिया के साथ अनैतिक सम्बन्ध स्थापित करके भी उसका धर्म भ्रष्ट नहीं होता और ब्राह्मण ही बना रहता है --

` गोदान ' में मातादीन का सम्बन्ध सिलिया चमारिन से हो जाता है पर न तो समाज से उसका बहिष्कार ही होता है और न किसी प्रकार का अनादर । चमारोंने तो उसके मुँह में हड्डी का टुकडा डाल दिया । फिर भी उसका धर्म विनष्ट न हुआ केवल मात्र प्रायश्चित करने से सब ठीक हो जाता है । उन्होंने धार्मिक पाखण्डियों के कुकृत्यों का निर्दयता से पर्दाफाश किया है ।`[१]

मातादीन धर्म का पालन करने लिए सभी ब्राह्माचारों का पालन करता था । इसीकारण वह ब्राह्मण ही बना रहता है । कारण भी स्पष्ट है --

` पर वह तिलक लगाता था, पोथी-पत्रा बाचता था, कथा-भागवत करता था, धर्म-संस्कार कराता था । उसकी प्रतिष्ठा में जरा भी कमी न थी । वह नित्य स्नान पूजा करके अपने पापों का प्रायश्चित कर लेता था ।`[२]

पवित्रता और ब्राह्मणत्व की रक्षा के लिए और चाहिए भी क्या ? उसका धर्म इसी खान-पान और छुआछूत विचार पर टिका हुआ है, उसने समझा था, हमारा धर्म है भोजन । भोजन पवित्र रहे तो फिर हमारे धर्म पर कोई आँच नहीं आ सकती । रोटियाँ ढाल बनकर अधर्म से हमारी रक्षा करती है --

` धर्म का मूल तत्व है पूजा-पाठ, कथा-व्रत और चौका-चूल्हा । जब पिता-पुत्र दोनों ही मूल तत्व को पकडे हुए हैं, तो किसकी मजाल है कि उन्हें पथ-भ्रष्ट कह सके ।`[३]

---

१ डॉ.कलावती प्रकाश - महासमरोत्तर हिन्दी उपन्यासों में जीवन-दर्शन- पृ.३२, श्याम प्रकाशन, फिल्म कलोनी, जयपुर-३, प्रथम संस्करण - १९८७

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१०५ - सरस्वती प्रेस ,२ । ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२०६ - सरस्वती प्रेस, २ । ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

इतनाही उसके लिए काफी था । इसके बाद तो वह गाँव में हर तरह की लम्पटता और धूर्तता कर सकता था । हर बहू-बेटी पर कुदृष्टि डाल सकता था । इससे उसके धर्म पर कोई आँच नहीं आती थी ।

प्रेमचंदजी मानव धर्म के हिमायती थे और किसी भी ढोंगी एवं अडम्बरयुक्त धर्म का समर्थन करना उनके लिए कठिन था —

' शताब्दियों की परतंत्रता तथा जड़ता के कारण धर्म में विकृति आ गई । विचार तथा धार्मिक पक्ष गौण होता गया । कुछ रुढियों, प्रभावों तथा परम्पराओं का पालना ही वास्तविक धर्म मान लिया गया । समाज में धर्म के नाम पर समाज का बहिष्कार तथा प्रायश्चित-विधान जैसी कुरीतियों ने जन्म लिया । हिन्दी के उपन्यासकारों ने वर्ण-व्यवस्था आधृत धर्म के इस कुत्सित रुप को पश्चाना तथा इनका विरोध किया ।'[१]

मातादीन के ब्राह्मणत्व का ढोंग व्यक्त करने के लिए प्रेमचंदजी ने एक घटना की सृष्टि की है । सिलिया का बाप हरखू अपनी जाति-बिरादरी के कुछ लोगों के साथ खलिहान में पहुँचता है । सिलिया व्दारा एक मुठ्ठी भर अनाज दूसरे को दिये जाने पर मातादीन ने उसे अपशब्द कर डाले थे और उसका घोर अपमान किया था । इससे सिलिया के माता-पिता उत्तेजित हो जाते है और आवेश में आकर वे मातादीन के मुँह में हड्डी का टुकडा डाल देते हैं । इससे मातादीन को भय लगता है कि अब लोग उसके हाथ का छुआ हुआ पानी नहीं पीएँगे । उसे नमस्कार नहीं करेंगे । गाँव में अब सम्मान नहीं करेंगे । परंतु दातादीन उसका ढांढस बढाते हुए कहते है कि काशी के ब्राह्मणों से विधान पूछकर प्रायश्चित किया जायगा । इसमें घबडाने की या चिंता करने की कोई बात नहीं । मातादीन को फिर भी आशंका बनी रहती है और वह आशंकित स्वर में पूछता है —

---

१ डॉ.कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद - पृ.२५७
अभिनव प्रकाशन,२१-ए,दरियागंज,नई दिल्ली-२,
प्रथम संस्करण - १९७९

` परासक्ति हो जानेपर फिर तो कोई दोष न रहेगा ?`

` परासक्ति हो जाने पर कोई दोष-पाप नहीं रहता ।`

` तो आज ही पण्डितों के पास जाओ ।`

` अब ही जाऊँगा बेटा ।`

` लेकिन पण्डित लोग कहे कि इसका परासक्ति नहीं हो सकता तब ?`

`उनकी जैसी इच्छा ।`

` तो तुम मुझे घर से निकाल दोगे ?`

` ऐसा नहीं हो सकता, बेटा । धन जाय, धरम जाय, लोक मरजाद जाय,पर तुम्हें नहीं छोड सकता ।`[१]

उपर्युक्त कथोपकथनांश से दातादीन और मातादीन की आंतरिक प्रवृत्तियाँ तो स्पष्ट होती ही है, साथ ही बडी कुशलता से प्रेमचंदजी ने ब्राह्मण धर्म के मिथ्याभिमान, आडम्बर एवं ढोंगी स्वभाव को स्पष्ट कर दिया है ।

धर्म का इससे बडा विद्रुप रुप और क्या हो सकता है ? सिलिया फिर भी पीछे-पीछे आने लगती है, तो मातादीन कठोरता से कहता है —

` मेरे साथ मत आ । मेरा तुझसे कोई वास्ता नहीं । इतनी सँासत करवा के भी तेरा पेट नहीं भरता ।`[२]

ब्राह्मण दातादीन धर्म के नाम पर अज्ञानी किसानों को फँसाते हैं । धर्म के नाम पर उन्हें धमकाते हैं । ` गोदान` में होरी की गाय को हीरा जहर देता है और कहीं भाग जाता है । धनिया हीरा का नाम लेती है परंतु होरी उसीका नाम नहीं लेता । इसी समय पण्डित दातादीन धर्म का भय दिखाते हुए धनिया से कहते है —

---

१ प्रेमचंद : गोदान - पृ.२१०-२११ - सरस्वती प्रेस,२ । ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ प्रेमचंद : गोदान - पृ.२११ - सरस्वती प्रेस,२ ।४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

`यह बात साबित हो गई, तो उसे हत्था लगेगी। पुलिस कुछ करे या न करे, धरम तो बिना दण्ड दिये न रहेगा। चली तो जा रूपिया, हीरा को बुला ला। कहना, पण्डित दादा बुला रहे है। अगर उसने हत्या नहीं की है, तो गंगाजली उठा ले और चौरेपर चढकर कसम खाय।'[१]

इसप्रकार 'गोदान' में ब्राह्मण वर्ग गरीब, अज्ञानी किसान को धर्म के नामपर लुटते है। ब्राह्मण वर्ग की पूजा-अर्चा, विधि-विधान तथा धार्मिक ग्रंथों का पठन यह केवल ढकोसला, पाखण्ड तथा ढोंग है। सही धर्म की पहचान ब्राह्मण को भी नहीं है। उनका ब्राह्मणत्व केवल दिखावा मात्र है --

`इन चाण्डालों के कुकृत्यों ने भारतीय - संस्कृति के विकासशील तत्वों को भी हास्यास्पद बना डाला है। धर्म के नामपर कैसे-कैसे पाखण्ड किये जाते है, वह पिंडदान और वह महापात्रों के नखरे और वह बिरादरी वालों का मूछों पर ताव देकर दावतें उडाना। कितना गलीज और घृणास्पद है। दुर्भाग्यवश इन पाखण्डियों को ब्राह्मण कहा जाता है जो ब्राह्मणत्व से उतना ही दूर है।'[२]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.९३ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ संपादक - डॉ.कुँवरपालसिंह सव्यसाची : प्रेमचंद और जनवादी साहित्य की परंपरा - पृ.१३५, माया प्रकाशन, नई दिल्ली-६३, प्रथम आवृति - १९८१